आधुनिक युग की आवश्यकता है होमियोपैथी

छोटी- छोटी गोल सफेद मधुर गोलियां होमियोपैथी का आधार हैं। ढाई सौ साल से आम लोग होमियोपैथी द्वारा इलाज कराकर इसका फायदा उठा रहे हैं। इसकी खोज जर्मनी में हुई। इसकी खोज जर्मन एम. डी. फिजीशियन सैम्युअल फेड्रिक गॉट फ्रिड हॉनमेन ने की। होमियोपैथिक दवाईयों का प्रमुख कार्य शरीर की सुरक्षा को बढ़ाना है और शरीर के हानिकारक तत्वों का नाश करना है। केवल रोगों पर ही नहीं बल्कि ठंडी, कफ, मधुमेह, हाई ब्लड प्रेशर के अलावा चिंता, उदासीनता और पागलपन पर भी इसकी दवाईयां असरकारक है। इसके अलावा इन दवाईयों से साईड इफेक्ट नहीं होता जिससे दवा का डोस लेकर भी रोगी रोजमर्रा के काम कर सकता है इस उपचार पद्धति से रोगों का मूल कारण जाना जा सकता है और इन दवाईयों से रोग प्रतिकारक शक्ति भी बढ़ती है। शरीर के प्रत्येक अंगों का दूसरे अंगों से संबंध रहता है।इस बात को ध्यान में रख कर ही इस पद्धति से रोगी का उपचार किया जाता है। होमियोपैथी के विषय में आम धारणा है कि इस उपचार पद्धति से रोग दूर होने में समय लगता है, यह सरासर गलत है। भयंकर बीमारियों पर भी इन दवाईयों का असर तेजी से होता है।

किसी भी प्रकार की दवाई विशेषज्ञों के सलाह के बिना नहीं लेना चाहिए।

होमियोपैथीक डॉक्टर रोगी का पूरा इतिहास जान कर ही उसका उपचार करते हैं। होमियोपैथ की छोटी-छोटी गोलियां बड़ा काम कर जाती हैं। होमियोपैथी इलाज को समाज में दूसरा स्थान प्राप्त है। इस समझ को बदलने का बीड़ा अनिता संजय सालुंखे ने उठाया है। डॉ. अनिता का कहना है कि ऐलोपैथ से रोगी को अच्छा किया जाता है लेकिन होमियोपैथ से रोग को ही जड़ से मिटा दिया जाता है।

अरब देशों में आम निर्यात करने वाले काले की कन्या डॉ. अनिता का बचपना बड़े लाड-प्यार से बीता। घर में सभी प्रकार की सुख, सुविधाएं उपलब्ध थी। उन्होंने गरीबी देखी नहीं लेकिन गरीबों द्वारा नाहक में ऐलोपैथ पर पैसा बर्बाद करता देख उन्होंन निश्चय क्रिया की इस समझ को बदलना होगा। गरीबों की सेवा करने का उद्देश्य लेकर उन्होंने अपना पहला दवाखाना चेंबूर की झोपड़पट्टी में खोला। चेंबूर स्थित जॉय अस्पताल में रातपाली में काम करने वाली वें पहली महिला डॉक्टर थी। सुबह घर आने के बाद कॉलेज जाना और रात को अस्पताल में सेवा करना उनका नित्य कर्म बन गया था और बचे हुए समय का सदुपयोग वे चेंबुर स्थित दवाखाना पहुंचकर गरीबों की सेवा में बीताती हैं। वर्तमान में डॉ.अनिता संजय सालुंखे एफ. ए. सी. होमियोपैथी सेंटर की मानद डॉक्टर हैं एवं १९९८ से वे लोगों का मुफ्त उपचार कर रही हैं। एफ. ए. सी. होमियोपैथी संस्था अंतरराष्ट्रीय दर्जे की होमियोपैथीक शिक्षा प्रदान करती है। इस संस्थान में जर्मनी, अमेरिका, ब्राजिल, बल्गेरिया, इजराइल व रूस के एम. डी. डॉक्टर डॉ. अनिता के मार्गदर्शन में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। डॉ. अनिता ने कई देशों की यात्राएं भी की है। आधुनिकता को प्राथमिकता प्रदान करना डॉ. अनिता की विशेषता है। आज के हाई प्रोफाइल युग में २००१ में विदेश से लौटने के बाद एम डी. की डिग्री हासिल कर उन्होंने अपना वेब क्लिनिक खोला। ई-मेल द्वारा वे रोगियों का इलाज व मार्गदर्शन करती हैं। उनका कहना है कि होमियोपैथ रोगी को जीवन रक्षक दवाईयां के सहारे जीवित रखने में विश्वास नहीं करती है बल्कि रोगी के शरीर को बलवान बनाकर रोग को समूल नष्ट करने में विश्वास रखती है।